शोध मंथन Vol. XIII No.I Jan.-Mar.2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

# भारतीय उपन्यास कला : उद्‌भव एवं विकास

प्राप्तिः 25.01.2022
स्वीकृतः 15.03.2022

**डॉ० पूनम भारद्वाज**
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
आर्य कन्या महाविद्यालय, हापुड़
संयोजकः बोर्ड ऑफ स्टडीज
चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
ईमेलः *poonambhardwajdr@gmail.com*

***सारांश***

*उपन्यास गद्य–लेखन की एक विधा है, जिसके लेखन में प्रमुख तौर पर सामाजिक जीवन की व्याख्या होती है। हिन्दी उपन्यास साहित्य के उद्‌भव और विकास की बात मील के पत्थर के समान कुछ चुने हुए उपन्यास लेकर ही की जा सकती है। प्रस्तुत शोध तत्र में उपन्यास साहित्य के उद्‌भव और विकास को संक्षेप में समेटने का प्रयास किया गया है।*

***मुख्य बिन्दु***

*उपन्यास, साहित्य, विकास।*

**भारतीय उपन्यास–कला**

मानव ने जब से अपने नेत्र खोले हैं, वह आत्म–अभिव्यक्ति एवं आत्मरक्षा के लिए प्रयत्नशील है, इसी कारण कथा साहित्य का उद्‌भव हुआ है। कथा–साहित्य में, कहानी या उन्यास के अंतर्गत मानव–जीवन की सम्य–असत्य, वास्तविक–काल्पनिक तथा राग–द्वेष सम्बन्धी कथाएं होती हैं; किन्तु प्रश्न उठता है कि गद्य साहित्य की 'उपन्यास' विधा का जन्म कैसे हुआ?

**''उपन्यास'' शब्द की व्युत्पत्ति**

'उपन्यास' शब्द 'उप' तथा 'न्यास' के योग से बना है जिनके अर्थ क्रमशः 'समीप' तथा 'वस्तु' हैं। संस्कृत में 'उपन्यास' शब्द 'उप' और 'नि' उपसर्ग में 'अस' धातु में 'घञ' प्रत्यय के योग से सम्पन्न हुआ है। 'उप' उपसर्ग का अर्थ होता है–'समीप' और 'नि' उपसर्ग के साथ 'अस' धातु के दो अर्थ है 'रखना' तथा 'छोड़ना'। प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में 'न्यास' शब्द का प्रयोग इन दो अर्थों के साथ–साथ अन्य अर्थो में भी हुआ है– महाकवि कालिदास के 'रघुवंशम' महाकाव्य में 'खुरन्यास'[1] शब्द का अर्थ खुरों का रखना है। याज्ञवल्य स्मृति में 'न्यास' शब्द का प्रयोग 'रखना'[2] 'छोड़ना'[3] तथा 'धरोहर'[4] के अर्थ में किया गया है। 'न्यास' शब्द का प्रयोग 'धरोहर' के अर्थ में 'स्वप्नवासवदत्तम'[5] में भी किया है। संस्कृत साहित्य में 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में हुआ है। 'दशरूपकम' में प्रतिमुख संधि के बारहवे अंग को उपन्यास कहा गया है।[6]

**उपन्यास की परिभाषा**

विद्वानों ने 'उपन्यास' को शब्दों में बाँधने का प्रयत्न किया है। 'उपन्यास' सम्राट मुंशी प्रेमचन्द ने लिखा है, ''मैं उपन्यास को मानव जीवन का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना

और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।[7] डॉ० श्याम सुन्दर दास के अनुसार, ''मनुष्य के वास्तविक जीवन की कल्पनिक कथा ही उपन्यास है।[8] गुलाबराय के शब्दों में, उपन्यास कार्य–कारण श्रृंखला में बँधा हुआ वह गद्य कथानक है, जिसमें अपेक्षाकृत अधिक विस्तार तथा पेचिदगी के साथ वास्तविक जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों से सम्बन्धित वास्तविक अथवा काल्पनिक घटनाओं द्वारा मानव जीवन के सत्य का रसात्मक रूप से उद्घाटन किया जाता है।[9] नवल किशोर के शब्दों में, उपन्यास का आधारभूत प्रयोजन जीवन की व्याख्या है।[10] सीताराम चतुर्वेदी ने कहा है– ''उपन्यास ऐसी गद्य कथा है जिसमें विशेष कौशल से कुतूहल उत्पन्न करके कोई ऐसी सत्य या कल्पित कथा कही जाती है जिससे मनोविनोद होता हो या किसी विषय या नीति का परिचय और प्रचार किया जाता हो।''11 नन्द दुलारे बाजपेयी के विचार से, ''उपन्यास गद्यात्मक कृति को कहते हैं।''[12]

शिवदान सिंह चौहान ने भी आधुनिक उपन्यास को साहित्य का एक नया और संश्लिष्ट रूपविधान बताया है, जिसके क्षेत्र एवम् संभावनायें अपरिसीमित है।[13] बज्ररत्न दास के विचार से ''उपन्यास मानव जीवन के छोटे या बड़े चित्र हैं और उनमें जीवन की ही व्याख्या की जाती है। उपन्यास में जीवन की इन्हीं सब अवस्थाओं में से एक या अनेक का चित्रण होता है और उनमें से किसी एक की प्रमुखता होते हुए भी जीवन की साधारण बातों की उपेक्षा नहीं की जा सकती क्योंकि चित्र को पूर्ण करने के लिए सभी को आवश्यकता होती है।'[14] मेरा मत है– 'उपन्यास वह गद्यात्मक कृति है, जिसमें मानव–जीवन का झाँकी और उसके चरित्र की विविध परिस्थितियों में प्रतिक्रियात्मक सम्भावनाओं को व्यक्त किया जाता है।'

**उपन्यास का उद्भव एवम् क्रमिक विकास**

गद्य साहित्य की इस सशक्त विधा की उत्पत्ति विद्वान संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत ही खोजते है। वे 'दशकुमारचरित' 'हर्षचरित' तथा 'कादम्बरी' आदि संस्कृत साहित्य से उपन्यास का उद्गम जोड़ते हैं परंतु हिन्दी उपन्यास साहित्य का जनक भरतेन्दु युग ही है। उपन्यास के विकास को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है–

**प्रथम चरण (1850 से 1900 तक)**

इस युग को भारतेंदु–युग के नाम से भी जाना जाता है। रामचंद्र शुक्ल श्री निवासदास कृत 'परीक्षागुरु' को हिन्दी का सर्वप्रथम मौलिक उपन्यास मानते हैं। आचार्य शुक्ल जी के अनुसार, 'अंग्रेजी ढंग का मौलिक उपन्यास पहले–पहल हिन्दी में लाला श्री निवास दास का 'परीक्षागुरु' था।'[15] आम्बिका दत्त व्यास, डॉ० श्री कृष्ण लाल तथा विजय शंकर मल्ल ने भी श्री निवास दास का उपन्यास 'परीक्षागुरु' ही हिन्दी का सर्वप्रथम मौलिक उपन्यास माना है। यद्यपि डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी का मत है– ''भरतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'पर्ण प्रकाश और चन्द्रप्रभा' नाम का सर्वप्रथम सामाजिक उपन्यास लिखा था।[16] डॉ० श्रीकृष्णलाल के अनुसार यह गुजराती भाषा से अनुदित है तथा डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय के अनुसार– यह मराठी भाषा से अनुदित है। लाला श्री निवास दास के उपरान्त ठाकुर जगमोहन सिंह ने 'श्यामास्वप्न' नामक उपन्यास लिखा, यद्यपि उसमें उपन्यास को वास्तविकता के स्थान पर काव्य–सौन्दर्य ही अधिक है। इसी समय पं० अम्बिका दत्त व्यास ने 'आर्य वृतान्त' नामक उपनयास लिखा यह साधारण कोटि का मनोरंजक उपन्यास है। इसके पश्चात् राधाकृष्ण दास ने 'निस्सहाय हिन्दू' और पं० बालकृष्ण भट्ट ने 'नूतन ब्रह्मचारी' तथा 'सौ अजान एस सुजान' नामक

छोटे–छोटे उपन्यास लिखे। इसी समय कुछ लेखकों ने बंगला तथा अंग्रेजी उपन्यासों का अनुवाद भी किया। बाबू गदाधर सिंह ने 'बग–विजेता' और 'दुर्गेश–नन्दिनी', बाबू राधाकृष्ण दास ने 'स्वर्णलता' और 'मरता क्या न करता आदि अनुदित उपन्यास हिन्दी साहित्य को प्रदान किये। राधाचरण गोस्वामी ने 'सावित्री', 'विरजा' तथा प्रताप नारायण मिश्र ने 'राजसिंह', 'इन्द्रा' और 'राधा–रानी' का अनुदान किया। इन अनुवादों द्वारा हिन्दी पाठक को नये ढंग के सामाजिक और ऐतिहासिक उपन्यासों का परिचय मिल गया। इससे मौलिक उपन्यास लेखन प्रारम्भ हुआ।

**द्वितीय चरण (1900 से 1915 तक)**

इस युग को द्विवेदी–युग के नाम से भी जाना जाता है। इस युग में जासूसी उपन्यासों की प्रधानता रही तथा अनुवादों की परम्परा भी जारी रही। इन अनुवादों ने हिन्दी के मौलिक उपनयासकारों का आदर्श ऊंचा करने में योगदान किया, इनका स्तर हिन्दी के मौलिक उपनयासों से श्रेष्ठ था। देवकीनंदन खत्री इस युग के सर्वप्रथम मौलिक उपन्यासकार हैं। उनके 'चन्द्रकान्ता' तथा 'चन्द्रकान्ता संतति' 'काजर की कोठरी' 'कुसुम कुमारी', 'वीरेन्द्र वीर' तथा 'भूतनाथ' उनके लोकप्रिय उपन्यास हैं। ये घटना प्रधान उपन्यास रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में, ''पहले मौलिक उपन्यास लेखक, जिनके उपन्यासों की सर्व साधारण में धूम हुई, काशी के बाबू देवकीनंदन खत्री थे।'' इस युग में रामकृष्ण वर्मा ने 'उग वृतानत–माला', 'अकबर', कार्तिक प्रसाद खत्री ने 'इला', 'प्रमिला' तथा गोपाल राम गहमरी ने 'चतुर चंचला', 'भानुवती', 'नये बाबू' तथा 'बड़े भाई'– उपन्यासों के अनुवाद किये। ऐतिहासिक अनुदित उपन्यासों में उदित नारायणलाल का 'दीपनिर्वाण', किशोरी लाल गोस्वामी का 'तारा' आदि उल्लेखनीय हैं। हरिऔध जी के 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' और 'अधखिला–फूल' लज्जाराम मेहता के 'प्राचीन हिन्दू मर्यादा', 'धूर्त रसिक–लाल', बाबू ब्रजनन्दन दास के बंगला शैली में 'राधाकांत' और 'सौन्दर्योपासक' उपन्यास प्रसिद्ध हुए। इस प्रकार इस चरण में उपन्यास कला का आरम्भ तो हो गया परन्तु उसमें गम्भीरता नहीं आ पायी।

**तृतीय चरण (1915 से 1936 तक)**

हिन्दी उपन्यासों के तृतीय चरण को प्रेमचन्द–युग कहना उचित है क्योंकि प्रेमचन्द ने उपन्यास कला को एक नयी दिशा प्रदान की। प्रेमचन्द के उपन्यास आदर्शोन्मुख– यथार्थवाद के सिद्धान्त को लेकर चले हैं। प्रेमचंद के 'सेवा सदन' में वैश्याओं की, 'निर्मला' में दहेज तथा बेमेल विवाह की, 'रंग–भूमि' में शासक वर्ग के अत्याचारों की, 'प्रेमाश्रम' में किसानों की, 'कर्मभूमि' में हरिजनों की, 'गवन' में मध्यम वर्ग की आर्थक विषमताओं की, 'गोदान' में मजदूरों के शोषण की समस्याओं का मार्मिक एवं सूक्ष्म रूप से चित्रण किया है। इस प्रकार प्रेमचन्द ने उपन्यास साहित्य की कायाकल्प कर दी, जिससे उपन्यास–कला चरमोत्कर्ष पर पहुँच गयी। इस युग में जय शंकर प्रसाद ने भी तीन उपनयास लिखे– 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' (अपूर्ण); विशम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' के ''माँ'', 'भिखारिणी' और 'संघर्ष'; उग्र जी के 'दिल्ली का दलाल', 'बुधुआ की बेटी', 'शराबी' आदि उपन्यासों में समाज की दुर्बलताओं को नग्न रूप में प्रस्तुत किया है। प्रताप नारायण श्रीवास्तव के 'विदा', 'विकास', 'विजय' और 'विसर्जन'; भगवती चरण वर्मा के 'वित्रलेखा, 'तीन वर्ष', 'टेढ़े–मेढे रास्ते', 'आखिरी दाव' और चतुरसेन शास्त्री के 'परख', 'हृदय की प्यास', 'वैशाली की नगर–वधू' 'सोमनाथ' प्रसिद्ध सामाजिक एवम् ऐतिहासिक उपन्यास हैं। इलावन्द्र जोशी के 'प्रेत और छाया', 'पर्दे की रानी', 'लज्जा', 'सुबह के भूले', 'सन्यासी' लोकप्रिय उपन्यास हैं। अज्ञेय का 'शेखर–एक जीवनी', सुन्दर उपन्यास है। वृन्दावन लाल वर्मा के 'गढ़ कुण्डार', 'विराट की

पद्मिनी' ऐतिहासिक उपन्यास हैं। निराला जी ने भी 'अलका' 'निरूपमा' 'प्रभावती' जैसे उत्कृष्ट उपन्यास लिखकर उपन्यास–साहित्य को समृद्ध बनाया।

**चतुर्थ चरण (सन् 1936 से अब तक जारी)**

प्रेमचन्द के बाद जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों ने काफी ख्याति प्राप्त की। इनके उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक–चित्रण प्रधान है। जैनेन्द्र कुमार के 'सुनीता', 'कल्याणी' 'त्यागपत्र' और 'परख'; यशपाल के 'दादा कामरेड', 'देशद्रोही' और 'दिव्या'; उपेन्द्र नाथ 'अश्क' के दृ'गर्म राख', 'बड़ी–बड़ी आँखें', गिरती दीवारें; फणीश्वर नाथ 'रेणु' का 'मैला आँचल'; यशपाल का 'दिव्या' 'झूठा सच'; नागार्जुन के 'बलचनमा', 'रतिनाथ की चाची'; धर्मवीर भारती के 'गुनाहों का देवता' 'सूरज का सातवा घोडा'; राजेन्द्र यादव के 'उखडें हुए लोग' 'कुलटा' 'शह और मात' प्रमुख उपन्यास हैं। रांगेय राघव के 'अंधेरे के जुगनू', 'मुर्दों का टोला' और 'कब तक पुकारूं'; राहुल सांकृत्यायन के 'सिंह सेनापति' 'जय यौधेय' उपन्यासों ने ख्याति प्राप्त की। अमृत लाल नागर ने 'बूँद और समुद्र' तथा 'महाकाल' नामक उपन्यासों में माक्सवादी विचारधारा को अपनाया। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के 'चारू–चन्द्रलेख और 'बाणभट्ट की आत्मकथा' लोकप्रिय रहे। मोहन राकेश का 'अन्धेरे बन्द कमरे'; बदी उज्जमां का 'एक चूहे की मौत'; निर्मल वर्मा काकृ 'वे दिन' 'लाल टीन की छत'; मन्नू भंडारी का 'महाभोज' 'आपका बंटी'; भीष्म साहनी का 'तपस'; ऊषा प्रियंबदा का 'रुकोगी नहीं राधिका'; श्री लाल शुक्ल का 'रागदरबारी'; ममता कालिया का 'बेघर' 'नरक दर नरक' नासिका शर्मा का 'जिंदा मुहावरे'; कृष्णा सोबती का 'सूरजमुखी अंधेरे के' प्रसिद्ध उपन्यास हैं। इस प्रकार हिन्दी गद्य साहित्य की उपन्यास विधा का आज चरम विकास हो रहा है तथा इस विधा में मनोरंजन के साथ–साथ जीवन की बहुमुखी प्रवृत्तियों का समावेश भी है।

**संदर्भ**

1. 'रघुवंशम्' महाकाव्यं (द्वितीय सर्ग) श्लोक सं० 2
2. याज्ञवल्य स्मृति (व्यवहार–अध्याय) सप्तम् प्रकरण, श्लोक सं० 105
3. याज्ञवल्य स्मृति (प्रायश्ति–अध्याय) चतुर्थ प्रकरण, श्लोक सं० 204
4. याज्ञवल्य स्मृति (व्यवहार अध्याय) चतुर्थ प्रकरण, श्लोक सं० 67
5. 'स्वप्नवासवदत्तम्' प्रथम अंक, श्लोक सं० 10
6. 'दशरूपकम्', प्रथम प्रकाश श्लाके सं० 10
7. 'कुछ विचार'– मुंशी प्रेमचंद, पृष्ठ **38.**
8. 'साहित्यालोचन'– श्यामसुंदर दास पृष्ठ **180.**
9. 'काव्य के रूप' गुलाब राय पृष्ठ **156.**
10. आलोचना–20 नवल किशोर जनवरी–मार्च, 1972 पृष्ठ **39.**
11. 'समीक्षा शास्त्र' सीताराम चतुर्वेदी पृष्ठ **270.**
12. 'आधुनिक साहित्य' नन्द दुलारे बाजपेयी पृष्ठ **123.**
13. 'हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष' शिवदान सिंह चौहान पृष्ठ **141.**
14. 'हिन्दी साहित्य और उपन्यास' बज्ररत्न दास पृष्ठ **10–11.**
15. 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' रामचन्द्र शुक्ल पृष्ठ **455.**
16. 'हिन्दी साहित्य', हजारी प्रसाद द्विवेदी पृष्ठ **415.**